

पूस की रात कहानी का सारांश PDF

'पूस की रात' एक ग्रामीण किसान के जीवन से संबंधित है। इस कहानी से हमें पता चलता है कि हल्कू नाम का एक व्यक्ति जिसके पास अपना जीवन यापन करने के लिए एक छोटा सा खेत है, ताकि वह अपना भरण-पोषण कर सके, लेकिन खेत से होने वाली आमदनी कुछ रुपये ही है। यह ऋण चुकाने में जाता है।

जाड़ों में उसने तीन रुपये मजदूरी करके जमा किये थे, पर हल्कू ने वे तीन रुपये साहूकार को दे दिये। हल्कू की पत्नी इसका पुरजोर विरोध करती है क्योंकि उसका मानना है कि हमने इतने दिनों से तीन रुपये जमा करके पूस के महीने में ठंड से बचने के लिए कंबल खरीदने के लिए रखे थे। जब हल्कू की पत्नी मुन्नी मना करती है तो हल्कू कहता है कि अगर मैं साहूकार को पैसे नहीं लौटाऊंगा तो वह मुझे गाली देगा।

हल्कू की पत्नी मुन्नी साहूकार को देखकर बेबस हो जाती है और उसे तीन रुपये देने को मजबूर हो जाती है। जब हल्कू अपना पैसा साहूकार को देने जा रहा था, तो ऐसा लग रहा था कि वह अपना दिल छोड़ने वाला है। क्योंकि उसने कंबल खरीदने के लिए मजदूरी कर पाई-पाई इकट्ठी की थी।

हल्कू अपने कुत्ते जबराले के साथ अपने खेत की रखवाली करने चला गया। पूस का महीना था और ठंडी हवा चल रही थी। तारे टिमटिमा रहे थे। हल्कू ठंड से काँप रहा था। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वे अपने पालतू कुत्ते जबराले को साथ लाए थे। उस समय हल्कू अपने जबराले से अपना मनोरंजन करता है। हल्कू के पास गर्म कपड़े नहीं हैं। उसके पास केवल एक शीट है।

उस चादर से कुछ नहीं होता, फिर उसके मन में एक विचार आता है और वह पास के आम के बगीचे में जाता है और सभी गिरे हुए पत्तों को इकट्ठा करता है और अलाव जलाता है और अलाव की आग उसके शरीर को गर्म करती है। और जब तक आग जलती रहती है तब तक ठंड से राहत मिलती है तब तक शरीर गर्म रहता है और ठंड से निजात मिल जाती है।

जब अग्नि बुझ जाती है और भस्म हो जाती है, तब भी उसका शरीर थोड़ा गर्म रहता है, जिसे वह अपनी चादर ओढ़कर बैठ जाता है। चिलम के पिता रात बिताने के लिए हल्कू के पास रुकते हैं। आधी रात है और आग बुझ जाती है। हल्कू आग के पास लेट गया। उनके

बगल में बैठकर जबरा खेतों की रखवाली कर रहे हैं। हल्कू के सो जाने के बाद, नीलगाय खेतों में प्रवेश करती है और फसलों को चराने लगती है। हल्कू का कुत्ता बहुत होशियार था।

नीलगाय के खेत में आने से जबरा सतर्क हो जाता है और नीलगाय पर भौंकने लगता है। हल्कू को भी पता चल जाता है कि नीलगाय उसके खेत में आ गई है। हल्कू को भी नीलगाय के चरने की आवाज सुनाई देती है। मन को दिलासा देता है, शायद यह मेरा भ्रम है। मेरे जबरा से कोई जानवर हमारी फसल में नहीं आ सकता, फिर भी दो-तीन कदम आगे बढ़ते ही उठ जाता है। ठंडी हवा इतनी तेज चलती है फिर वह चादर ओढ़कर अपनी जगह बैठ जाता है और रात भर सो जाता है और ऐसे सोता है जैसे किसी ने उसे रस्सी में बांध दिया हो।

बेचारा जबरा अकेला भौंक-भौंक कर नीलगाय को भगा रहा है। जब सुबह आती है, सूरज निकल जाता है। उसकी पत्नी मुन्नी खेत में आती है, और उसे बताती है कि पूरी फसल नष्ट हो गई है। सारी फसल जानवरों ने चर ली है। सब कुछ समतल है। जबरा मुर्दे की तरह खामोश बैठा था। अब मजदूरी कर किराया और कर्ज चुकाना पड़ रहा है। यह सुनकर कि नीलगाय ने सारी फसल नष्ट कर दी है, हल्कू खुश हो जाता है और कहता है कि अब उसे इतनी सर्द रात में यहाँ नहीं सोना पड़ेगा। इस तरह हल्कू खुश हो जाता है कि अब उसे रात को चैन की नींद आएगी। यह कहानी जमींदारों के शोषण और एक आम किसान की दुर्दशा को बयां करती है।